

॥ ॐ हूँ आचार्य परमेश्वरीभ्यो नमः ॥

विशद महाअर्चना विधान

आशीर्वाद

परम पूज्य साहित्य रत्नाकर

क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

- कृति - विशद महाअर्चना विधान
- आशीर्वाद - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- रचयत्री - ब्र. आस्था दीदी
- संस्करण - प्रथम -2012 • प्रतियाँ :1000
- संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
- सहयोग - ब्र. सुखनन्दनजी भैया
- संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), किरण दीदी
- प्राप्ति स्थल - 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मैनहरी का रास्ता, जयपुर
फोन: 0141-2349907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार

ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केंद्र

संजय दिगम्बर जैन समाज, रेवाड़ी

संजय दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी

(हरियाणा) प्रधान-09416882301

मूल्य - 25/- रु. मात्र

रचयत्री : ब्रह्मचारिणी आस्था दीदी

मुद्रक : राज ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर • फोन : 2313339, मो.: 9829050791

समर्पण की कोई भाषा नहीं

हृदय में भक्ति जिसके हो, विशद वह भक्त कहलाए।
भक्ति के भाव से भरकर, गुरु के गीत वह गाए॥
समर्पित वह करे सब कुछ, गुरु के पाक चरणों में।
चिरायु हों मेरे गुरुवर, श्रेष्ठ वह भावना भाए॥

(शार्दूलविक्रीडित छंद)

अर्हद् भक्ति परायणास्य विशदं जैनं वचोऽभ्यस्यतो।
निर्षिद्धस्य परापवाद वदने, शक्तस्य सत् कीर्तने॥
चारित्र्योद्यत चेतसा क्षपयतः कोपादि विद्वेषिणा।
देवाध्यात्म समाहितस्य सकलाः सर्पयतु मे वासराः॥

हे जिनेन्द्र देव ! मेरे प्रत्येक दिन अर्हन्त की भक्ति में, निर्मल जिनवाणी के अभ्यास में, पर की निन्दा न करने में, सत्पुरुषों के गुणों का वर्णन करने में शक्ति का प्रयोग हो, चारित्र्य के लिए उद्यमी चित्त हो, क्रोधादि शत्रुओं का क्षय करने में तथा आत्मलीनता में समय व्यतीत हो।

आचार्य भगवन् श्री अमितगति स्वामी ने अपनी भावना भाते हुए उक्त छंद में जीवन को मंगलमय बनाने की भावना प्रकट की है। उन्होंने जीवन का हर क्षण जिनपूजा शास्त्र श्रवण और गुरु अर्चा में समर्पित किया है। पूर्वाचार्यों के संदेश को सार्थक करने के लिए हमारा समय शुभ उपयोग में व्यतीत हो एवं जिन गुरु भक्ति में समर्पित जीवन का प्रत्यक्ष उदाहरण पेश करते हुए **ब्र. आस्था** ने **विशद महाअर्चना विधान** की रचना की जिससे भक्त जन गुरु भक्ति का लाभ प्राप्त कर सकें क्योंकि गुरु भक्ति एक साधर्मि के लिए श्रेष्ठ कार्य है। स्व-पर भावना की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है तथा गुरु भक्ति में समर्पित कृति के माध्यम से अपने भावों को जन-जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास है।

जिनश्रुत गुरु भक्ति में समर्पण नित-प्रति वृद्धि को प्राप्त होती रहे, इसी भावना से कृतिकार एवं सहयोगियों के लिए मेरा आशीर्वाद है। इसी प्रकार भविष्य में अपना समय और उपयोग को शुभ में प्रयोग करते रहें।

- आचार्य विशदसागर

बड़ागाँव, 18 जून, 2012

भक्ति से मुक्ति

तीर्थंकर प्रकृति का पुण्य करोड़ों मनुष्यों में से कोई एक व्यक्ति ही उपार्जन कर पाता है। जिस मनुष्य की ऐसी उत्कृष्ट भावना हो कि मैं त्रिलोकवर्ती समस्त प्राणियों का उद्धार करूँ। उस भावना के साथ जिसके 16 अन्य भावनाओं में से दर्शनविशुद्धि भावना के साथ कोई एक दो तीन आदि और भी भावना हो उस महान् जगत हितैषी पवित्र व्यक्ति के तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। इन्हीं सोलहकारण भावनाओं में ग्यारहवें नम्बर की आचार्य भक्ति भावना है। साधु संघ के अधिनायक आचार्य कहलाते हैं। उनकी पूजन भक्ति करना, गुणानुवाद करना आचार्य भक्ति है।

संघ के समस्त मुनि, त्यागी व्रती, आचार्य की आज्ञानुसार चर्या करते हैं। नवीन मुनि दीक्षा आचार्य ही देते हैं। मुनिजन आचार्य महाराज के समक्ष अपने दोषों की आलोचना करते हैं और उनकी शक्ति अनुसार प्रायश्चित्त भी आचार्य ही देते हैं। यदि कोई मुनि समाधिमरण ग्रहण करना चाहे तो आचार्य महाराज ही उसकी शारीरिक योग्यता, उसकी परीषह सहन करने की क्षमता तथा उसके स्वास्थ्य आदि बातों का विचार करके उसको सल्लेखना धारण करने की अनुमति देते हैं। इस तरह आचार्य अपने मुनिसंघ के नायक होते हैं।

लोककल्याण की दृष्टि से विचार किया जावे तो आचार्य का पद सबसे उच्च है क्योंकि मुनि संघ की सुव्यवस्था करके वे मुनियों का नहीं अपितु संसार का महान् उपकार करते हैं अतः अरहंत सिद्ध भगवान के बाद आचार्य परमेष्ठी का पद रखा गया है। अर्हंत भगवान के साक्षात् अभाव में मोक्षमार्ग के नेता आचार्य ही तो होता है, उनकी आज्ञा का पालन करना, उनका हृदय से सम्मान करना, उनको ऊँचे आसन पर बैठाना, उनको हाथ जोड़कर सिर झुकाकर नमस्कार करना, उनके पीछे चलना, उनके आते ही खड़े हो जाना, उनके बैठ जाने पर उनकी अनुमति से बैठना, उनके चरण स्पर्श करना, उनके पैर दबाना, थकावट दूर करने के लिए उनके हाथ-पैर, पीठ आदि दबाना आचार्य भक्ति है। आचार्य महाराज वैसे तो अन्य साधुओं के समान 28 मूलगुणों का आचरण करते हैं किन्तु उनके अलावा 36 मूलगुण उनमें और भी माने गये हैं। 12 तप, 10 धर्म, 5 आचार, 6 आवश्यक और 3 गुप्ति। इस प्रकार 28 साधु परमेष्ठी के, 36 आचार्य परमेष्ठी के मूलगुणों को ध्यान में रखते हुए गुणानुवाद को लक्ष्य में रखकर ब्रह्मचारिणी बहिन आस्था दीदी ने **‘विशद महाअर्चना विधान’** की रचना कर महान् पुण्य का संचय किया है। गुरु भक्ति के रूप में यह पूजन महामण्डल विधान करके भव्य जीव अथाह पुण्य का अर्जन करें।

- मुनि विशालसागर

बड़ागाँव, 17 जून, 2012

भावों से ही भव बनें

संत और श्रावक, धर्म रथ को खींचने वाले हैं।
संत श्रावक ही भक्ति बगिया सींचने वाले हैं॥
भक्ति ही मुक्ति का सोपान है मेरे भाई।
भक्ति के बिना जिन्दगी के दिन व्यर्थ बीतने वाले हैं॥

देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति जो भी प्राणी मन, वचन, काय की एकता से करता है। वही प्राणी निश्चित ही असीम पुण्य का संचय कर अपने मानव जीवन को ही नहीं अपने निर्मल, पवित्र भावों के द्वारा अपना अगला भव भी सार्थक बना लेता है।

कहा भी है-

श्रुत जलधि पारोभ्यः स्वपर-मत, विभावना पटु मतिभ्यः।
सुचरित तपो निधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुण गुरुभ्यः॥

अर्थात् जो श्रुतरूपी सागर के पारगामी है, स्वपर मत के जानने में जिनकी बुद्धि कुशल है तथा जो सम्यक्चारित्र, सम्यक्तप की निधि स्वरूप हैं, ऐसे उन गुरुवर के गुणों की प्राप्ति के लिए हम गुरुवर के द्वय चरण में त्रय भक्ति युक्त शत कोटि मेरा नमन् हो।

जो छत्तीस गुणों से सहित हैं, पञ्चाचार का पालन करने वाले हैं, अपने शिष्यों का अनुग्रह करने में कुशल हैं, ऐसे गुरुदेव के गुणगान करने में तो शायद हम समर्थ नहीं हैं। फिर भी गुरुदेव की भक्ति में, उनकी ज्ञान गंगा में अवगाहन कर जो ब्र. बहिन आस्था ने गुरु की भक्ति को शब्दों में संग्रहीत करने का प्रयास कर हम सभी को गुरु चरणों की अर्चा का साधन गुरु भक्तों को प्रदान किया है जिससे वे अतिशय पुण्य का संचय करेंगे। बहिन इसी तरह गुरु की भक्ति में मग्न होकर, आर्थिका दीक्षा लेकर समाधि सहित मरण को प्राप्त हो क्योंकि कहा भी है कि गुरु भक्ति से संयमी घोर संसार समुद्र को भी तैरकर पार कर लेता है। ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से मुक्त होकर जन्म-मरणादि रोगों से छुटकारा प्राप्त कर लेता है। बहिन गुरु चरण रज प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाये, ऐसी मेरी भावना है।

- ब्र. ज्योति दीदी

बड़ागाँव, 18 जून, 2012

स्तवन

(शम्भू छंद)

श्री गुरुवर जी मंगलकारी, सबके मन को भाते हैं।
णमोकार के पद में भाई, तीजे पद को पाते हैं॥
तीन लोकवर्ती जीवों का, गुरुवर करते हैं उपकार।
गुरु की महिमा हम क्या गाएँ, बोल रहे सब जय जयकार॥1॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्र के, गुरुवर होते रत्नाकर।
सत् शास्त्रों के ज्ञाता होते, आप कहे गुरु करुणाकर॥
मोक्षमार्ग के नेता गुरुवर, रत्नत्रय को पाते हैं।
तुम जैसा बनने को गुरुवर, शरण आपकी आते हैं॥2॥
पञ्चाचार परायण गुरुवर, तुमको है मेरा वंदन।
जिन आगम का सार भरा है, करते हम सादर अर्चन॥
शिक्षा दीक्षा परायण गुरुवर, कहलाते सूरि भगवन्।
श्रमण संघ के नायक हो तुम, तब चरणों में करूँ नमन्॥3॥
सूर्य समान तेज के धारी, सागर सम गंभीर हृदय।
चन्द्र समान रही शीतलता, कहलाते हो देवालय॥
श्रुतसागर में लीन हुये तो, बुद्धि प्रकाशक आप कहे।
अतः आपके चरणों में हम, दुष्कर्मों को छोड़ रहे॥4॥
अज्ञानी होकर हम गुरुवर, महिमा अनुपम गाते हैं।
भक्ति के उद्रेक हृदय में, मेरे नहीं समाते हैं॥
क्षमामूर्ति साहित्य दिवाकर, गुरुवर तुम कहलाते हो।
गागर में सागर के द्वारा, रचना विविध कराते हो॥5॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
इति आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान्
निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।

काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं
निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फँसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं
निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्
निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vkpk;Z izfr"Ek dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik;ip jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
हैं वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।

गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ प्रत्येकार्घ्य

दोहा- परमेष्ठी आचार्य हैं, विशद सिन्धु महाराज।
पुष्पाञ्जलि कर पूजती, मिलकर सकल समाज॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वान।

ॐ हूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति
आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणम्।

पाँच महाव्रत (शम्भू छंद)

द्रव्य भाव से जो जीवों का, करते हैं हरदम उपकार।
चर्या यत्नपूर्वक करते, होय ना जीवों का संहार॥

परम 'अहिंसा व्रत' के धारी, शिवपथ के राही शिवकार ।

विशद गुणों को पाने हेतु, वंदन मेरा बारम्बार ॥1॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अहिंसा महाव्रत प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐसा 'सत्य' कभी न बोलें, जिससे हो प्राणों का घात ।

हैं अलीक वचनों के त्यागी, जैनाचार जगत् विख्यात ॥

उत्तम सत्य धर्म के धारी, शिवपथ के राही शिवकार ।

विशद गुणों को पाने हेतु, वंदन मेरा बारम्बार ॥2॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय सत्य महाव्रत प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

रखी गिरी भूली पर वस्तु, लेने का जो करते त्याग ।

व्रत 'अचौर्य' पालन करने में, रखते हैं हरपल अनुराग ॥

रत्नत्रय के धारी अनुपम, शिवपथ के राही शिवकार ।

विशद गुणों को पाने हेतु, वंदन मेरा बारम्बार ॥3॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अचौर्य महाव्रत प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं अब्रह्म के त्यागी गुरुवर, निजानंद में रहते लीन ।

'ब्रह्मचर्य' व्रत पालन करते, महाव्रती है ज्ञान प्रवीण ॥

मोक्षमहल में जाने वाले, शिवपथ के राही शिवकार ।

विशद गुणों को पाने हेतु, वंदन मेरा बारम्बार ॥4॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय ब्रह्मचर्य महाव्रत प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

बाह्यभ्यंतर परिग्रह त्यागी, कहलाए आचार्य प्रवर ।

ज्ञान ध्यान तप से करते हैं, नित्य प्रति निज बुद्धि प्रखर ॥

'अपरिग्रह' निर्ग्रंथ मुनीश्वर, शिवपथ के राही शिवकार ।

विशद गुणों को पाने हेतु, वंदन मेरा बारम्बार ॥5॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अपरिग्रह महाव्रत प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पाँच समिति

देख शोधकर चलते मुनिवर, भूमि को चउ दण्ड प्रमाण ।

अभयदान देते जीवों को, शिवपथ के राही गुणवान ॥

'ईर्यापथ' के धारी मुनिवर, रहे लोक में मंगलकार ।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उनके चरणों हम शुभकार ॥6॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय ईर्यासमिति प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

वाणी जिनकी हितमित प्रिय है, बोल रहे आगम अनुसार ।

भव्य जीव सुनकर कर लेते, जीवन में अपना उपकार ॥

'भाषा समिति' के धारी मुनिवर, रहे लोक में मंगलकार ।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उनके चरणों हम शुभकार ॥7॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय भाषासमिति प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध सरल प्रासुक भोजन शुभ, जैसा मिलता है आहार ।

शांत भाव से ग्रहण करें जो, आगम की आज्ञा अनुसार ॥

मुनि 'ऐषणा समिति' के धारी, रहे लोक में मंगलकार ।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उनके चरणों हम शुभकार ॥8॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय ऐषणासमिति प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

देख शोधकर के वस्तु का, करते हैं जो निक्षेपण ।

करते नहीं प्रमाद क्रिया में, उनके चरणों विशद नमन ॥

'आदान निक्षेपण' के धारी मुनि, रहे लोक में मंगलकार ।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उनके चरणों हम शुभकार ॥9॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय आदान निक्षेपण समिति प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रासुक निर्जंतुक भूमि में, देख शोधकर करें निहार ।

जीवों की रक्षा का करते, मल क्षेपण में सतत् विचार ॥

मुनि 'व्युत्सर्ग' समिति के धारी, रहे लोक में मंगलकार ।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, उनके चरणों हम शुभकार ॥10॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय व्युत्सर्ग समिति प्राप्त
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पाँच इन्द्रिय (नरेन्द्र छंद)

आठ भेद 'स्पर्शन' इंद्री, के होते दुखदायी ।

संत दिगम्बर वश में करते, उन विषयों को भाई ॥

सुर नर विद्याधर भी जिनकी, अतिशय महिमा गाते ।

उनके चरणों विशद भाव से, हम भी शीश झुकाते ॥11॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय स्पर्शन इंद्रिय विजय प्राप्त
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पाँच भेद 'रसना' के पाकर, जिह्वा मोद मनाए ।

आत्म निरत मुनिवर को ये रस, नहीं जरा भी भाए ॥

सुर नर विद्याधर भी जिनकी, अतिशय महिमा गाते ।

उनके चरणों विशद भाव से, हम भी शीश झुकाते ॥12॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय रसनेन्द्रिय विजय प्राप्त
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'घ्राणेन्द्रिय' दुर्गंध सुगंधी, का व्यवहार कराए ।

समताधारी मुनिवर पाके, नहीं हर्ष दुख पाए ॥

सुर नर विद्याधर भी जिनकी, अतिशय महिमा गाते ।

उनके चरणों विशद भाव से, हम भी शीश झुकाते ॥13॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय घ्राणेन्द्रिय विजय प्राप्त
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

'चक्षु' इंद्री निज विषयों में, होती रमने वाली ।

संतों ने निज भेदज्ञान से, अपनी दृष्टि सम्हाली ॥

सुर नर विद्याधर भी जिनकी, अतिशय महिमा गाते ।

उनके चरणों विशद भाव से, हम भी शीश झुकाते ॥14॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय चक्षु इंद्रिय विजय प्राप्त
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्त विषय 'कर्णेन्द्रिय' के शुभ, जैनागम में गाए ।

परम जितेन्द्रिय मुनिवर विषयों, में भी समता पाए ॥

सुर नर विद्याधर भी जिनकी, अतिशय महिमा गाते ।

उनके चरणों विशद भाव से, हम भी शीश झुकाते ॥15॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कर्णेन्द्रिय विजय प्राप्त
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

छः आवश्यक कर्तव्य (शंभू छंद)

ऋषि मुनि जिनकी भक्ति करने, मन ही मन हर्षति हैं ।

सौम्य सरल भावों के द्वारा, 'स्तुति' कर गुण गाते हैं ॥

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद आचार्य का पाते हैं ।

कर्तव्यों का पालन करके, शिव नगरी को जाते हैं ॥16॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय स्तुति आवश्यक कर्तव्य
प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन काल की 'सामायिक' में, करते हैं निज का जो ध्यान ।

समतामय परिणाम बनाकर, करते पर का हैं कल्याण ॥

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद आचार्य का पाते हैं ।

कर्तव्यों का पालन करके, शिव नगरी को जाते हैं ॥17॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय सामायिक आवश्यक
कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनेन्द्र के चरण कमल की, करें 'वंदना' बारम्बार ।

राग-द्वेष भावों के त्यागी, साधू कहे गये अनगार ॥

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद आचार्य का पाते हैं ।

कर्तव्यों का पालन करके, शिव नगरी को जाते हैं ॥18॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय वंदना आवश्यक कर्तव्य
प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान ध्यान तप के धारी गुरु, करते हैं नित प्रत्याख्यान।
‘स्वाध्याय’ आवश्यक धारी, करते निज आतम का ध्यान॥
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद आचार्य का पाते हैं।
कर्तव्यों का पालन करके, शिव नगरी को जाते हैं॥19॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय स्वाध्याय आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पापों का प्रक्षालन करने, आगे हरदम रहते हैं।
अहो-रात्रि में दोष लगे तो, ‘प्रतिक्रमण’ नित करते हैं॥
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद आचार्य का पाते हैं।
कर्तव्यों का पालन करके, शिव नगरी को जाते हैं॥20॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय प्रतिक्रमण आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मोह त्याग करते निज तन से, परमेष्ठी का करते जाप।
कायोत्सर्ग आवश्यक धारी, नाश करें सब अपने पाप॥
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, पद आचार्य का पाते हैं।
कर्तव्यों का पालन करके, शिव नगरी को जाते हैं॥21॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कायोत्सर्ग आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सात अन्य गुण

चौबोला छंद (जिसने राग...)

दो से चार माह के भीतर, ‘केशलुंच’ करते मुनिराज।
परम दिगम्बर मुनि को वंदन, करती है यह सकल समाज॥
मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार॥22॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय केशलुंचनगुण प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा करते हुए जीव की, मुनिवर न करते स्नान।
कहा मूलगुण जिन संतों का, जैनागम में अस्नान॥

मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार॥23॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अस्नान गुण प्राप्त अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

संयम हेतु तन की रक्षा, करने को भोजन इक बार।
विषयों की आशा को तजकर, लेते हैं साधु अनगार॥
मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार॥24॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय एकभुक्तिगुण प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

खड्गासन में स्थिर होकर, लेते हैं मुनिवर आहार।
कहा मूलगुण जिन मुनियों का, श्रेष्ठ जैन आगम अनुसार॥
मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार॥25॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय स्थितिभुक्तिगुण प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शिला भूमि पाटा पर सोते, कोमल शैया करते त्याग।
‘क्षिति शयन’ करने वाले मुनि, देह से न रखते हैं राग॥
मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार॥26॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय भूमिशयनगुण प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

‘दातुन मंजन कभी न करते’, जीवदया का रखें विचार।
दाँतों को चमकाने का वह, करते पूर्ण रूप परिहार॥
मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार॥27॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अदंतधावनगुण प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय जय करने वाले मुनि, ‘वस्त्रों का करते परित्याग’।
मुक्ति पथ पर बढ़ने वाले, तन से भी न रखते राग॥

मोक्षमार्ग के राही हैं जो, तीन लोक में मंगलकार ।
उनके चरणों नमन हमारा, विशद भाव से बारम्बार ॥28॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय वस्त्रत्यागगुण प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादश तपधारी आचार्य (शम्भू छंद)

द्वादश तप को धार मुनीश्वर, आचार्य प्रवर कहलाते हैं ।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, विशद धर्म बतलाते हैं ॥
व्रत उपवास क्रिया करते हैं, 'अनशन' तप को धरते हैं ।
धन्य-धन्य श्री विशद सिंधु जी, सबके मन को हरते हैं ॥29॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनशन तप प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

छप्पन भोग सामने पाकर, त्याग स्वयं करते जाते ।
नियमित भोजन की तुलना में, लघु भोजन करके आते ॥
खाने से न चेतन चलता, मन विषयों में अटक रहा ।
'अवमौर्दर्य सुव्रत' के धारी, जैनाचार्य को विशद कहा ॥30॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अवमौर्दर्य तप प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

चर्या को जब निकलें गुरुवर, धार प्रतिज्ञा चलते हैं ।
नहीं किसी को कुछ बतलाते, निज स्वरूप में ढलते हैं ॥
तीर्थकर अवतारी गुरुवर, 'व्रतपरिसंख्यान' को पाते हैं ।
वसु कर्मों से छूट सकें हम, विशद भावना भाते हैं ॥31॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय व्रतपरिसंख्यान तप प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

लड्डू पेड़ा बर्फी आदिक, श्रावक रोज बनाते हैं ।
चीनी दूध और घी रस से, जो छुटकारा पाते हैं ॥
'रस परित्याग' का पालन करते, ऐसे गुरुवर श्रेष्ठ ऋषीष ।
तब पदवी को पाने हेतु, चरण झुकाएँ अपना शीश ॥32॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय रसपरित्याग तप प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

कर्मों के वश होकर गुरुवर, कठिन परीषह तुम सहते ।
शैया टेढ़ी-मेढ़ी हो फिर, खुश होकर उसमें रहते ॥

'विविक्त शैयासन' के धारी गुरु, आचार्य कहाते गुणकारी ।
विशद गुणों को हम पा जाएँ, तब पद वंदन शुभकारी ॥33॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय विविक्तशैयासन तप प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्दी गर्मी वर्षा में तुम, कष्ट अनेकों सहते हो ।
तन से हो निर्लिप्त गुरुवर, समता में रत रहते हो ॥
कर्म निर्जरा करने वाले, 'काय क्लेश' तप पाते हैं ।
मोक्षमार्ग पर चलें हमेशा, यही भावना भाते हैं ॥34॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय काय-क्लेश तप प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

खाने-पीने सोने चलने, में यदि कोई हुआ हो दोष ।
मिथ्या हो वह दोष हमारा, व्रतमय जीवन हो निर्दोष ॥
'प्रायश्चित्त' करके दोषों का, मुनिवर करते हैं वारण ।
मुक्ती पथ के राही अनुपम, बंधु जग के निष्कारण ॥35॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय प्रायश्चित्त तप प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शन ज्ञान चरित उपचारिक, 'विनय' सुतप कहलाता है ।
सम्यक्दृष्टि जीव विनय तप, अंतरंग यह पाता है ॥
विनय सहित साधर्मि जग में, नित सम्मान को पाते हैं ।
आचार्यश्री के चरण कमल से, सत् संयम अपनाते हैं ॥36॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय विनय तप प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

रोग शोक से थके हुए हो, बने हुए हैं जो मुनिवर ।
सेवा 'वैयावृत्ति' करके, पुण्य कार्य करते ऋषिवर ॥
विशद ज्ञान को पाकर तुमने, दूर किया उनका क्रंदन ।
तब चरणों की धूलि से गुरु, हो जाए माटी चंदन ॥37॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय वैयावृत्ति तप प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

चितन मंथन लेखन द्वारा, स्वाध्याय जो करते हैं।
सम्यक्ज्ञान जगा करके गुरु, शुभ भावों से रहते हैं॥
'स्वाध्याय' है ज्ञान सरोवर, भव की बाधा हरता है।
भव बंधन से छुटकारा दे, शिव सुख में जो धरता है॥38॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय स्वाध्याय तप प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

जग की माया त्याग किए हैं, क्षमामूर्ति कहलाते हैं।
ज्ञान ध्यान में लीन ऋषीश्वर, धर्म ध्वजा फहराते हैं॥
तप 'व्युत्सर्ग' को पाने वाले, मुक्ति वधु को पाते हैं।
चरण शरण में आने वाले, सादर शीश झुकाते हैं॥39॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय व्युत्सर्ग तप प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त रौद्र परिणाम छोड़कर, करते हैं नित धर्म ध्यान।
परमेष्ठी को हृदय सजाकर, करें नित्य उनका गुणगान॥
'ध्यान' सुतप को पाने वाले, होते परमेष्ठी आचार्य।
पञ्चाचार प्राप्त करते हैं, गुरुवर से इस जग के आर्य॥40॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय ध्यान तप प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्मधारी आचार्य (शंभू छंद)

घोर उपद्रव सहने वाले, क्रोध कभी न करते हैं।
सुख दुख में समता पाकर के, 'क्षमा धर्म' को धरते हैं॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥41॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षमा धर्म प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी होकर भी ना मानी, 'मार्दव धर्म' के धारी हैं।
गर्व किसी से जो ना करते, जग में करुणाकारी हैं॥

जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥42॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मार्दव धर्म प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

मन में कुटिल भाव आवे तो, क्षण में दूर भगाते हैं।
मायाचारी कभी न करते, 'आर्जव धर्म' को ध्याते हैं॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥43॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय आर्जव धर्म प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि तन पाकर विभु बने हो, नहीं लोभ का नाम निशान।
'शौच धर्म' को पाने वाले, करते हैं निज का कल्याण॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥44॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय शौच धर्म प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य धर्म की छाँव तले वह, दुख से न भय खाते हैं।
नहीं कभी वह झूठ बोलते, 'सत्य वचन' अपनाते हैं॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥45॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय सत्य धर्म प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को पाकर गुरुवर, निज का ध्यान लगाते हैं।
'संयम' को अपनाने वाले, स्वर्ग मोक्ष सुख पाते हैं॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥46॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय संयम धर्म प्राप्त अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि से 'तप' के द्वारा, कर्मों का वन जला रहे।
निज उत्कर्ष बढ़ाते गुरुवर !, प्रवचन वक्ता प्रखर कहे॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥47॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय तप धर्म प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
परम विशुद्धि के धारी हैं, 'त्याग' धर्म अपनाते हैं।
रत्नत्रय की निधि पाने को, मन में बहु अकुलाते हैं॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥48॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय त्याग धर्म प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
परिग्रह चौबिस भेद जानकर, उनसे आप विरक्त कहे।
'आर्किचन' व्रतधार मुनीश्वर, शिव से नाता जोड़ रहे॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥49॥
ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय आर्किचन्य धर्म प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
विशद गुणों के रत्नाकर हैं, भरत सिन्धु से पद पाये।
विशद धर्म को पाने हेतु, 'ब्रह्मचर्य व्रत' अपनाये॥
जैनाचार्य कहाने वाले, विशद ज्ञान बिखराते हैं।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, सत् श्रद्धान जगाते हैं॥50॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय ब्रह्मचर्य धर्म प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

तीन गुप्ति

मन के सभी शुभाशुभ मुनिवर, रोका करते पूर्व विकार।
मन गुप्ति के धारी अनुपम, संत दिगम्बर हैं मनहार॥
मनगुप्ति के धारी मुनि की, महिमा कही है अपरम्पार।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते हम शत् बार॥51॥
ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मनोगुप्ति प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
असत् वचन जो नहीं बोलते, सत्य का भी करते परिहार।
जिह्वा इन्द्रिय को वश करके, मौन का लेते हैं आधार॥

वचनगुप्ति के धारी मुनि की, महिमा कही है अपरम्पार।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते हम शत् बार॥52॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय वचनगुप्ति प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
तन की चेष्टाएँ जो रोकेँ, करते हैं स्थिर आसन।
होते ना आधीन किसी के, करते हैं निज पर शासन॥
कायगुप्ति के धारी मुनि की, महिमा कही है अपरम्पार।
चरण कमल में अर्घ्य चढ़ाकर, वंदन करते हम शत् बार॥53॥
ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कायगुप्ति प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।

पंचाचार (शंभू छंद)

जीव अजीवादि तत्त्वों पर, करते हैं जो 'सत् श्रद्धान'।
क्रोधादि को तजने वाले, बनते हैं जो सिद्ध समान॥
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतु, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं॥54॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय दर्शनाचार प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
संशय विभ्रम अरु विमोह का, करने वाले हैं संहार।
सम्यक्ज्ञानी बनकर गुरुवर, पालन करते 'ज्ञानाचार'॥
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतु, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं॥55॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय ज्ञानाचार प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति त्रय, तेरह विधि चारित्र कहा।
यह 'चारित्राचार' पालना, गुरुवर का शुभ लक्ष्य रहा॥
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतु, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं॥56॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय चारित्राचार प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा।
अंतरंग बहिरंग तपों को, पाल रहे शक्ति अनुसार।
'तपाचार' को धारण करके, करते विषयों का संहार॥
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं।
पंचम गति को पाने हेतु, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं॥57॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय तपाचार प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

निज शक्ति को नहीं छिपाकर, पाल रहे हैं 'वीर्याचार' ।
कर्म नाश करने को हरपल, करें साधना कई प्रकार ॥
तीन योग से विशद चरण में, अपना शीश झुकाते हैं ।
पंचम गति को पाने हेतु, चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं ॥58 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय वीर्याचार प्राप्त अर्घ्य निर्व.स्वाहा ।

छः आवश्यक कर्तव्य (शंभू छंद)

समता रंग से रमे हुए हैं, नहीं राग ना द्वेष न मान ।
रत्नात्रय का पालन करके, करते हैं जग का कल्याण ॥
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम ।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥59 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय समता आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों का सम्बन्ध नशाने, करें वंदना कई प्रकार ।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य गुणों को, पाने करें दोष परिहार ॥
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम ।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥60 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय वंदना आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्वों का चिंतन मंथन कर, जिन की स्तुति करते हैं ।
मोक्ष मार्ग का नेता बनकर, कर्म कालिमा हरते हैं ॥
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम ।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥61 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय स्तुति आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

संत दिगम्बर बनकर के जो, आत्म साधना नित्य करें ।
अहोरात्रि के दोषों को नित, प्रतिक्रमण कर पूर्ण हरे ॥

पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम ।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥62 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय प्रतिक्रमण आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

स्व-पर के कल्याण हेतु शुभ, मोक्ष मार्ग को लक्ष्य किया ।
प्रत्याख्यान करें मुनिवर जी, सर्व परिग्रह त्याग दिया ॥
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम ।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥63 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय प्रत्याख्यान आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ योगों के द्वारा ही वह, योगी 'विशद' कहाते हैं ।
निश्चल होकर मन ही मन में, कायोत्सर्ग लगाते हैं ॥
पंचाचार परायण गुरुवर, करते कर्मों से संग्राम ।
मन-वच-तन से चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम ॥64 ॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कायोत्सर्ग आवश्यक कर्तव्य प्राप्त अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

संघर्षों उपसर्गों में तुम, समता रस को पीते हो ।
कई उपसर्ग परिषह सहकर, क्षमा धार कर जीते हो ॥
क्षमामूर्ति कहलाये गुरुवर, क्षमा की मूरत प्यारी हो ।
मन वच तन से आत्म समर्पित, जीवन की बलिहारी हो ॥65 ॥

ॐ हूँ क्षमामूर्ति उपाधि अलंकृत प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जैनधर्म का सार भरा है, शब्द छंद का ज्ञान हुआ ।
लिखते रहते हो हरपल तुम, शुभ कवियों का हृदय हुआ ॥
कवि हृदय कहलाते गुरुवर, अंतर में रम जाते हैं ।
भावों के द्वारा ही गुरुवर, सत् संयम को पाते हैं ॥66 ॥

ॐ हूँ कविहृदय उपाधि अलंकृत प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सागर की लहरें तो केवल, तट को ही छू पाती हैं।
ठहर ठहर सागर की लहरें, कचरा तट पर लाती हैं॥
दर्शन ज्ञान चरित्र तप साधक, रत्नों के रत्नाकर हैं।
रत्नाकर साहित्य बताया, कहते जग के नागर हैं॥67॥

ॐ हूँ साहित्य रत्नाकर उपाधि अलंकृत प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नव पदार्थ अरु सब द्रव्यों को, यथारूप पहिचान रहे।
भेष दिगम्बर धारी गुरुवर, वीतराग गुणवान कहे॥
समयसार का सार भरा है, शुद्ध बुद्ध अविकारी हो।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, यतिवर शुभ अनगारी हो॥68॥

ॐ हूँ सिद्धांतविज्ञ उपाधि अलंकृत प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम जल को लेकर, जन्म मरण का नाश करें।
शीतल चंदन अर्पित करके, भव आताप विनाश करें॥
अक्षय अक्षत लेकर गुरुवर, शाश्वत पद को वरण करें।
पुष्प सुगंधी की खुशबू से, काम भाव विध्वंस करें॥
तन की भूख मिटाने गुरुवर, सरस-सरस चरु लाए हैं।
छाया मोह-तिमिर है काला, दीप जलाकर लाए हैं॥
अष्ट कर्म की धूप जलाने, धूप दशांगी लाए हैं।
विविध फलों से पूजन करके, तुम सा बनने आए हैं॥
पाने अविनाशी पद गुरुवर, स्वर्ण थाल हम लाए हैं।
सर्व सुखों को पाने हेतु, 'विशद' भावना भाए हैं॥69॥

ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय जय समिति महाव्रत, छह आवश्यक पाल रहे।
सप्त अन्य तप धर्म गुप्तियाँ, पञ्चाचार सम्हाल रहे॥70॥

ॐ हूँ सर्वमूलगुण प्राप्त प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- गुरु गुण गाने को हुए, आज यहाँ वाचाल।
माँ इंदर के लाल की, गाते हैं जयमाल॥

(चौपाई)

जय-जय गुरु ज्ञान अवतारी, बाल ब्रह्मचारी हितकारी।
तन-मन से हो गये अविकारी, महिमा गाते हैं नर-नारी॥1॥
जग में मंगल आप कहाये, जिनके पद वंदन को आए।
चार शरण जग में कहलाई, तीजी है गुरुवर की भाई॥2॥
भारत देश रहा शुभकारी, मध्य प्रदेश की महिमा न्यारी।
जिला छतरपुर अनुपम गाया, ग्राम कुपी जिसमें बतलाया॥3॥
पूर्व पुण्य का उदय हुआ है, इंदर माँ को धन्य किया है।
नाथूरामजी पिता कहाये, संवत् बीस सौ इक्कीस कहाये॥4॥
चैत्र कृष्ण चौदस दिन आया, जन्म गुरु ने जिस दिन पाया।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, एम.ए. पूर्वार्द्ध अनुपम गाई॥5॥
परिजन सब मन में हरषाए, ब्याह करन की बात चलाए।
कई संबंध ब्याह के आये, नहीं आपके मन में भाए॥6॥
ठुकराकर तुम घर से आये, विराग गुरु की शरण को पाए।
नगर सेठ के गृह मुनि आए, वह आहार नहीं कर पाए॥7॥
हुआ दुखी मन में वह भारी, क्या गलती हो गई हमारी।
देख के मन में चिंतन आया, पुण्य नहीं मानव कर पाया॥8॥
संत पुण्य की मूर्ति कहाए, कितने पुण्यवान कहलाए।
हम भी ऐसा पुण्य कमाएँ, जैनमुनि की दीक्षा पाएँ॥9॥
द्रोणगिरि जी गुरुवर आए, वहाँ पे वर्षायोग रचाए।
पद आचार्य प्रतिष्ठा जानो, हुई गुरु की ऐसा मानो॥10॥
आठ नवम्बर बानवे आया, ब्रह्मचर्य व्रत तब अपनाया।
विमलसिंधु के आशिष द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा॥11॥
गिरि सम्मोदशिखर है न्यारी, अतिशयकारी है मनहारी।
तीर्थ श्रेयांसगिरिजी पर आये, दीक्षा के तब भाव बनाये॥12॥

विराग गुरु है जग उपकारी, मूरत जिनकी प्यारी-प्यारी ।
 ऐलक का पद तुमने पाया, विशद सिंधु शुभ नाम कहाया ॥13॥
 आठ फरवरी का दिन आया, सन् उन्नीस सौ छियानवे गाया ।
 द्रोणगिरि शुभ दीक्षा पाए, मुनि विशदसागर कहलाए ॥14॥
 मुनि बिहार कर जयपुर आए, दो हजार सन् चार कहाए ।
 गुरु भरतसागर भी आए, मुनिवर श्री ने दर्शन पाए ॥15॥
 साथ में ब्रह्मचारी कई आए, गुरुवर तब यह बात सुनाए ।
 इनको साथ में क्यों भटकाते, दीक्षा क्यों न इन्हें दिलाते ॥16॥
 हमने यह अधिकार न पाया, मुनिश्री ने वचन सुनाया ।
 गुरुवर जी सुनकर मुस्कराए, मुनिवर को अधिकार दिलाए ॥17॥
 गुरु विराग आशीष भिजाए, भरत सिन्धु आचार्य बनाए ।
 दो हजार सन् पाँच कहाया, तेरह फरवरी का दिन आया ॥18॥
 मालपुरा नगरी शुभकारी, अवसर पाये यह नर-नारी ।
 गुरुवर हैं वात्सल्य के धारी, करें साधना मुनि अविकारी ॥19॥
 काव्य कला है जिनकी प्यारी, लिखे विधान कई मनहारी ।
 गुरु की हंसमुख मुद्रा प्यारी, जैनाचार्य है मंगलकारी ॥20॥
 वर्षायोग दो हजार दस आया, चँवलेश्वर इतिहास रचाया ।
 पार्श्व प्रभु की मूरत प्यारी, देख हरषती दुनिया सारी ॥21॥
 जिसका शुभ मंदिर बनवाया, नाटी काकी का कहलाया ।
 कई उपसर्ग वहाँ पर आए, उनसे जरा नहीं घबराए ॥22॥
 सबने बोला जय जयकारा, 'आस्था' भक्ति नमन् हमारा ।
 चरणों में बस अरज यही है, तब चरणों में मुक्ति यही है ॥23॥
 जैनधर्म की शान तुम्हीं हो, जिनवाणी की ढाल तुम्हीं हो ।
 जिन आगम का सार भरा है, सिद्धांतविज्ञ यह नाम धरा है ॥24॥
 साहित्य रत्नाकर सब कहते, चिंतन मंथन करते रहते ।
 चँवलेश्वर के छोटे बाबा, कहलाते हो सबके बाबा ॥25॥
 धन्य-धन्य हैं गुरु हमारे, जग में रहते जग से न्यारे ।
 मुक्ति पथ तुमने अपनाया, वह पाने का भाव बनाया ॥26॥

अतः आपके चरणों आए, पद में सादर शीश झुकाए ।
 दो आशीष हमें हे स्वामी !, हम भी बने मोक्ष पथगामी ॥27॥
 ॐ हूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्व. स्वाहा ।

दोहा- विशद गुणों की अर्चना, करते मंगलकार ।
 चरणों में 'आस्था' जगे, वन्दन बारम्बार ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

दोहा- भारत देश प्रधान है, तीन लोक में श्रेष्ठ ।
 आर्यावर्त जिसका रहा, दूजा नाम यथेष्ट ॥1॥
 सघन पठारों से घिरा, जिला छतरपुर नाम ।
 कुपी ग्राम जिसमें बसा, विशद गुरु का धाम ॥2॥
 खजुराहो शुभ तीर्थ है, शांतिनाथ भगवान ।
 चरणों में नित आ गए, करने को गुणगान ॥3॥
 मुक्ति जब तक न मिले, चरणों में हो ध्यान ।
 विशद सिंधु आचार्य को, याद करें धीमान ॥4॥
 लेखक कई विधान के, बाबा कहें या राम ।
 शब्द अर्थ का ज्ञान न, छंद शास्त्र का काम ॥5॥
 मन में एक लगन लगी, लिखना एक विधान ।
 गुरु प्रभु के आशीष से, विशद किया गुणगान ॥6॥
 सदर जैन मंदिर रहा, पार्श्व प्रभु का धाम ।
 हस्तिनागपुर के निकट, मेरठ जिला है नाम ॥7॥
 विघ्न अनेकों आ गए, नहीं लिया विश्राम ।
 ज्येष्ठ कृष्ण ग्यारस तिथि, बुधवार की शाम ॥8॥
 वीर निर्वाण पच्चीस सौ, अड़तिस रहा महान् ।
 पूज्यश्री के ज्ञान से, हृदय जगे विज्ञान ॥9॥
 भूल-चूक को माफकर, होय धर्म का ध्यान ।
 'आस्था' से वास्ता रहा, शीघ्र होय निर्वाण ॥10॥

आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा

परमेष्ठी को नमन् कर, नव देवों के साथ ।
लिखने का साहस करें, चरण झुकाएँ माथ ॥
रोग-शोक का नाश कर, पाएँ मुक्ती धाम ।
विशद सिंधु गुरुवर तुम्हें, शत्-शत् बार प्रणाम ॥

चौपाई

चउ अनुयोगों के गुरु ज्ञाता, सूरी तुम जन-जन के त्राता ।
भक्तों के तुम (गुरु) देव कहाते, श्रुत अमृत की धार बहाते ॥
जय-जय छत्तिस गुण के धारी, भविजन के तुम हो हितकारी ।
भाव सहित तुमरे गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते ॥
नाथूरामजी पिता तुम्हारे, इंदर माँ की नयन के तारे ।
छोड़ सभी झंझट संसारी, बन गए आप बाल ब्रह्मचारी ॥
आठ नवम्बर बानवें आया, ब्रह्मचर्य व्रत तव अपनाया ।
एक वर्ष तक रहे विरागी, संयम की मन में सुध जागी ॥
स्वारथ का संसार है सारा, मिला न अब तक कोई सहारा ।
दीन-हीन बालक ते गुरुवर, कृपा कीजिये भव्य जानकर ॥
ऐलक पद तुमने अपनाया, पाँचें मार्ग शीघ्र सित पाया ।
सन् उन्नीस सौ छियानवें आया, आठ फरवरी का दिन पाया ॥
तन मन से हो गये अविकारी, जैसे हो चंदन की क्यारी ।
भरत सिंधु के दर्शन पाये, तन मन में गुरु अति हर्षाये ॥
श्री गुरुवर ने दिया सहारा, भव्यों का करने उद्धार ।
भक्तों को सदज्ञान सिखाओ, मोक्षमार्ग पर उन्हें बढ़ाओ ॥
तुमको है आशीष हमारा, जीवन हो मंगलमय सारा ।
गुरुवर मालपुरा में आए, सबने गुरु के दर्शन पाए ॥
मन में हर्ष हुआ था भारी, गद्गद् हुई थी जनता सारी ।
तेरह फरवरी का दिन पाया, दो हजार सन् पाँच कहाया ॥
मुनिवर से आचार्य बनाया, गुरुवर की शुभ पाई छाया ।
फिर गुरुवर से आशिष पाए, दीक्षा देकर शिष्य बनाए ॥

एक मुनि दो क्षुल्लक भाई, उनने फिर शुभ दीक्षा पाई ।
जग में जितने पद बतलाये, सारे ही निष्फल कहलाये ॥
मोक्षमार्ग का पथ पा जाएँ, तव चरणों हम शीश झुकाएँ ।
ज्ञानवीर हो ध्यान वीर हो, मुनि श्रावक के महावीर हो ॥
जीवन के आदर्श तुम्हीं हो, प्रेय श्रेय भगवंत तुम्हीं हो ।
क्षमामूर्ति गुरुदेव हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे ॥
वीतराग मुद्रा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी ।
जपने से गुरु नाम तुम्हारा, भव सिन्धु का मिले किनारा ॥
दुनियाँ में नहीं कोई हमारा, दे दो गुरुवर हमें सहारा ।
मात-पिता तुमको ही माना, परम ब्रह्म परमात्म जाना ॥
धर्म-कर्म के तुम हो ज्ञाता, सूरी तुम हो भाग्य विधाता ।
जग में सबको सब कुछ देते, बदले में तुम कुछ न लेते ॥
सरस्वती की है यह माया, होनहार विद्वान बनाया ।
पञ्च महाव्रत पालन करते, दशधर्मों को जो आचरते ॥
चिंतन मंथन अनुभव द्वारा, भक्तों का करते उद्धार ।
चरण शरण में जो भी आता, मन वांछित फल तब पा जाता ॥
चरणों की रज है सुखकारी, दुख दरिद्र की नाशनहारी ।
तव भक्ती का मिला सहारा, कथन किया लघु शब्दों द्वारा ॥
हम हैं दीन हीन संसारी, लिखने की क्या शक्ति हमारी ।
भक्ति करने हम भी आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए ॥
भाव समर्पित करने आए, नहीं जरा मन में अकुलाए ॥
'आस्था' भाव समर्पित करते, तव चरणों में मस्तक धरते ॥

दोहा-

विशद चालीसा जो पढ़े, विशद भक्ति के साथ ।
विशद ज्ञान पा कर बनें, विशद लोक का नाथ ॥
विशद ज्ञान पावे सदा, करे विशद कल्याण ।
विशद लोक में जा बसे, बने विशद धीमान ॥

- ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

आरती

(तर्ज-भक्ति बेकरार है.....)

गुरुवर का दरबार है, भक्ति की झंकार है ।
देखो आज गुरुवरजी की, हो रही जय-जयकार है ॥
ग्राम कुपी में जन्म लिए है, घर-घर मंगल छाए जी-2
देख पुत्र की शान हँसीली, नाम रमेश बताए जी ॥-2

गुरुवर.....

देख दशा संसार वास की, मन वैराग्य समाया जी-2
राह पकड़ ली मोक्षपुरी की, भेष दिगम्बर पाया जी ॥-2

गुरुवर.....

घृत का दीप जलाकर गुरुवर, आये तेरे द्वारे जी ।
मोह-तिमिर का नाश करो अब, जगें भाग्य हमारे जी ॥-2

गुरुवर.....

गुण गाते हैं आज गुरुजी, तुम जैसे गुण पाने जी ।
भक्ती करते यहाँ आपकी, आके इसी बहाने जी ॥-2

गुरुवर.....

तुमने सबको दिया सहारा, हम भी शरण में आये हैं ।
'आस्था' रहे शरण में हरदम, यही भावना भाये हैं ॥

गुरुवर.....

तुम्हें हमने मेरे गुरुवर स्वयं दिल में बसाया है ।
जिन्दगी में गुरु तुमने, मुझे जीना सिखाया है ॥
गमों से हम जमाने में, सदा गमगीन रहते थे ।
गमों को हे गुरु ! तुमने, हमें पीना सिखाया है ॥

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा
रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाण्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन रिवले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरुण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मनः स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री बृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुब्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तमर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेश्वरी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्प्रेदशिवर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुण्ड्रन्त विधान
46. वाग्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनविम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंबलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान
64. विशद अभिनव कल्पतरू विधान
65. विशद श्रेयांसनाथ विधान
66. विशद जिनगुण संपत्ति विधान
67. विशद अजितनाथ विधान
68. विशद एकीभाव स्तोत्र विधान
69. विशद ऋषिमण्डल विधान
70. विशद अरहनाथ विधान
71. विशद विषापहार स्तोत्र विधान